CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 20th Oct. 2020, Revised on 27th Oct. 2020, Accepted 08th Nov. 2020

शोध पत्र

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा संबंधी अशुद्धियों एवं कारणों का अध्ययन

* **नीतू चौधरी,** *शोधार्थी*
डॉ. नीतू सिंघल, *सहायक आचार्या*
महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)
Email-aaravchoudhary215@gmail.com Mobile-9829164788

मुख्य शब्द : *हिन्दी भाषा की अशुद्धियाँ, उच्च प्राथमिक स्तर आदि.*

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा संबंधी अशुद्धियों एवं कारणों का अध्ययन से संबंधित है। इस शोध कार्य का उद्धेश्य उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा संबंधी अशुद्धियों एवं कारणों का अध्ययनकरना था। इस शोध में न्यादर्श के रुप में जयपुर जिले के 400 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया। इस अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।शोधार्थी ने स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग करते हुए प्रदतों का संकलन किया। प्रदतों का विश्लेषण टी परीक्षण द्वारा किया गया। प्राप्त परिणामों में प्रदर्शित हुआ किउच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा संबंधी अशुद्धियों एवं कारणोंमें सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तावना

मानव विचारशील प्राणी है, उसके अंतर मे जो विचार तथा भावना उत्पन्न होती है। उन्हें व्यक्त करने के लिए एक माध्यम का होना अनिवार्य है अतः हम भाषा के माध्यम से ही दूसरों से सम्पर्क स्थापित करते है। तथा भाषा के माध्यम से ही विचारो का आदान प्रदान महत्वपूर्ण है। विचारों को हम भाषा, चित्रकला, व्यवहार तथा संकेतों द्वारा व्यक्त करते है। शिक्षा का सर्वाधिक प्रयुक्त साधन भाषा है।

भाषा हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। भाषा सम्प्रेषण का एक माध्यम है। भाषा मनुष्य की एक विशिष्ट योग्यता है। जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी बात एवं विचार दूसरों तक प्रेषित करता हैं। भाषा एवं सम्प्रेषण दोनो का ही हमारे जीवन मे महत्वपूर्ण स्थान है। समाज की संरचना, संस्कृति का निर्माण तथा मनुष्य की सभ्यता आदि सब हमारी भाषा पर आधारित है। भाषाविदों ने भाषा के विषय में अपने–अपने ढंग से विचार किया है। भाषा की उत्पत्ति के संबंध में भी विद्वान एकमत नहीं है। जब यह स्थिति है, तो हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास के विषय में भी एकमत हो पाना कठिन कार्य है। वास्तविकता यह है कि भाषा कोई भी हो उसके निमित किसी निश्चित सीमा रेखा या समय को नहीं प्रस्तुत किया जा सकता है। यह तो निश्चित ही है कि भाषा किसी एक व्यक्ति से

उत्पन्न नहीं हुई है, अपितु वह एक विशाल जन–समुह की वाणी का सायास प्रतिफलन है। हम यह भी कह सकते हैं कि प्रदेश विशेष के समाष्टिगत स्वरों में वहाँ की भाषा ने अपनी संक्षा को अस्तित्वती बनाया। इस प्रकार की भाषा का उदय एक निश्चित सीमा रेखा पर नहीं माना जा सकता है। यही तथ्य हिन्दी के विषय में भी सत्य प्रतीत होता है। हिन्दी एक सरल भाषा है। हिन्दी का ध्वनि चिह्न वैज्ञानिक हे। एक ध्वनि के लिए इसमें एक चिह्न है। इसमें उच्चारित ध्वनियाँ ही अंकित होती है अर्थात् जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी भी जाती है। इसी कारण यह आसानी से सीखी जा सकती है। हिन्दी का व्याकरण यद्यपि संस्कृत के नियमों पर मुख्य रूप से आधारति है किन्तु इसकी क्रियाएँ सरल रूप में प्रयुक्त होती हैं तथा संस्कृत के कठिन नियमों से बंधी हुई नहीं होती हैं।

अध्ययन की आवश्यकता

किसी भी भाषा को शुद्ध रूप में बोलना तथा लिखना अर्थात् शुद्ध वाणी तथा शुद्ध लेखन उस भाषा को सीखने में संम्भवतः सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवयव है। प्रसिद्ध भाषाविद् भर्तृहरि का तो यह भी मानना है कि सफेद हीरों से जड़ित सुन्दर कंगन तथा हार सुगंधित पुष्पों से बने हार तथा सुन्दर चमकते बालों का सौन्दर्य किसी व्यक्ति को उतना सुशोभित नहीं करता जितना कि उसके द्वारा प्रयुक्त भाषा की वाग्मिता तथा लालित्य उसे सुशोभित कर सकती हैं। प्रायः यह देखा गया है कि आंचलिक प्रभाव के कारण विद्यार्थी हिन्दी भाषा में अशुद्धियाँ कर देते हैं। प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से शोधकत्री ने यह जानने का प्रयास किया है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी भाषा में कौन–कौनसी अशुद्धियाँ की जाती हैं तथा इन अशुद्धियों के प्रमुख कारण क्या हैं ? ताकि उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों में शुद्ध लेखन एवं शुद्ध वाचन का विकास किया जा सके।

अध्ययन के उद्देश्य

(1) सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उच्चारण संबंधी त्रुटियों का अध्ययन करना।

(2) सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा लेखन संबंधी त्रुटियों का अध्ययन करना।

(3) गैर सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उच्चारण संबंधी त्रुटियों का अध्ययन करना।

(4) गैर सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा लेखन संबंधी त्रुटियों का अध्ययन करना।

(5) उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में अशुद्धियों के विभिन्न कारणों का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

1. सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उच्चारण संबंधी त्रुटियॉं पाई जाती है।
2. गैर सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उच्चारण संबंधी त्रुटियाँ पाई जाती है।
3. सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियाँ पाई जाती है।

   (अ) सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियों मे अन्तर नही पाया जाता है।

   (ब) सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियों मे अन्तर नहीं पाया जाता है।

4. गैर सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियाँ पाई जाती हैं।

   (अ) गैर सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियों में अंतर नहीं पाया जाता हैं।

(ब) गैर सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियों में अंतर नहीं पाया जाता हैं।

5. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियाँ पाई जाती है।

(अ) उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियों में अंतर नहीं पाया जाता हैं।

(ब) उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियों में अंतर नहीं पाया जाता हैं।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध वर्तमान से सम्बन्धित होने के कारण शोधकर्जी द्वारा सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में जयपुर जिले के उच्च प्राथमिक स्तर के 400 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। न्यादर्श का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

उपकरण

इस शोध कार्य में स्वनिर्मित प्रश्नावली, साक्षात्कार मापनी एवं अवलोकन अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी मूल्य ज्ञात करने के लिए टी परीक्षण इत्यादि सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

1. **सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उच्चारण संबंधी त्रुटियॉ पाई जाती है।**

व्याख्या – सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उच्चारण संबंधी त्रुटियों को जानने के लिए शोधार्थी ने स्वयं विद्यालय जाकर विद्यार्थियों से उनकी पाठ्य पुस्तक में से एक अध्याय का पठन करवाया। शोधार्थी ने यह पाया कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी हिन्दी भाषा के उच्चारण में बहुत सी गलतियां करते हैं। विद्यार्थियों के उच्चारण में उचित आरोह–अवरोह, लय, ताल, बलाघत का अभाव, उच्चारण में दीर्घ और लघु मात्राओं पर ध्यान न देना, संयुक्ताक्षरों को पूर्ण स्वर की तरह बोलना, अनुस्वार और चन्द्र बिन्दु अनावश्यक आगमन, स्वरलोप तथा रेफ का गलत ढंग से पढना आदि त्रुटियां पायी जाती हैं। जिसका प्रमुख कारण प्रादेशिक भाषा का बहुत प्रभाव, ध्वनि तंत्र में विकार, असावधानी, लिपि का अधूरा ज्ञान, शिक्षक द्वारा ध्यान न देना एवं शिक्षक द्वारा स्वयं अशुद्ध उच्चारण पाया गया।

2. **गैर सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उच्चारण संबंधी त्रुटियाँ पाई जाती है।**

व्याख्या – गैर सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उच्चारण संबंधी त्रुटियों को जानने के लिए शोधार्थी ने स्वयं विद्यालय जाकर विद्यार्थियों से उनकी पाठ्य पुस्तक में से एक अध्याय का पठन करवाया। शोधार्थी ने यह पाया कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी हिन्दी भाषा के उच्चारण में बहुत सी गलतियां करते हैं। विद्यार्थियों के उच्चारण में उचित आरोह–अवरोह, उच्चारण में दीर्घ और लघु मात्राओं पर ध्यान न देना, संयुक्ताक्षरों को पूर्ण स्वर की तरह बोलना, विराम चिन्ह का ज्ञान न होना, अनुस्वार और चन्द्र बिन्दु अनावश्यक आगमन, स्वरलोप तथा रेफ को गलत ढंग से पढना आदि त्रुटियां पायी जाती हैं। जिसका प्रमुख कारण प्रादेशिक भाषा का बहुत प्रभाव, ध्वनि तंत्र में विकार, असावधानी, लिपि का अधूरा ज्ञान, हिन्दी भाषा के प्रति अरूचि, विद्यार्थियों द्वारा ध्यान न दिया जाना तथा अभ्यास की कमी है।

3. सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियाँ पाई जाती है।

(अ) उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियों मे अन्तर नही पाया जाता है।

क्षेत्र	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
ग्रामीण	छात्र	50	12.84	3.120	1.78	स्वीकृत
	छात्राएं	50	13.02	2.738		

व्याख्या :–उपरोक्त तालिका के आधार पर अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं, कि उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के बालको का मध्यमान 12.84, मानक विचलन 3.12 पाया गया तथा बालिकाओं का मध्यमान 13.02, मानक विचलन 2.73 पाया गया है। इन प्राप्तांकों से टी परीक्षण का मान 1.78 पाया गया जो कि स्वतंत्रता के अंश 98 के 0.05 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य 1.98 तथा 0.01 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य 2.62 से कम है। अतः सार्थक नही अन्तर पाया जाता है। शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

(ब) उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियों मे अन्तर नहीं पाया जाता है।

क्षेत्र	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
शहरी	छात्र	50	12.32	2.80	1.75	स्वीकृत
	छात्राएं	50	13.3	2.84		

व्याख्या :–उपरोक्त तालिका के आधार पर अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं, कि उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के बालको का मध्यमान 12.32, मानक विचलन 2.80 पाया गया तथा बालिकाओं का मध्यमान 13.3, मानक विचलन 2.84 पाया गया है। इन प्राप्तांकों से टी परीक्षण का मान 1.75 पाया गया जो कि स्वतंत्रता के अंश 98 के 0.05 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य 1.98 तथा 0.01 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य 2.62 से कम है। अतः सार्थक नही अन्तर पाया जाता है। शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

4. गैर सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियाँ पाई जाती हैं।

(अ) उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियों में अंतर नहीं पाया जाता हैं।

क्षेत्र	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
ग्रामीण	छात्र	50	12.5	2.73	2.31	स्वीकृत
	छात्राएं	50	13.84	3.12		

व्याख्या :–उपरोक्त तालिका के आधार पर अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं, कि उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के गैर सरकारी विद्यालय के बालको का मध्यमान 12.50, मानक विचलन 2.73 पाया गया तथा बालिकाओं का मध्यमान 13.84, मानक विचलन 3.12 पाया गया है। इन प्राप्तांकों से टी परीक्षण का मान 2.31 पाया गया जो कि स्वतंत्रता के अंश 98 के 0.05 स्तर पर टी के प्राप्त

मूल्य 1.98 से अधिक है तथा 0.01 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य 2.62 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना 0.05 स्तर पर अस्वीकृत तथा 0.01 स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

(ब) उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियों में अंतर नहीं पाया जाता हैं।

क्षेत्र	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
शहरी	छात्र	50	12.82	2.66	0.14	स्वीकृत
	छात्राएं	50	12.74	2.98		

व्याख्या :–उपरोक्त तालिका के आधार पर अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं, कि उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के गैर सरकारी विद्यालय के बालको का मध्यमान 12.82, मानक विचलन 2.66 पाया गया तथा बालिकाओं का मध्यमान 12.74, मानक विचलन 2.98 पाया गया है। इन प्राप्तांकों से टी परीक्षण का मान 0.14 पाया गया जो कि स्वतंत्रता के अंश 98 के 0.05 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य 1.98 तथा 0.01 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य 2.62 से कम है। अतः सार्थक नही अन्तर पाया जाता है। शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

5. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियाँ पाई जाती है।

(अ) उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियों में अंतर नहीं पाया जाता हैं।

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
सरकारी	100	12.93	2.91	0.58	स्वीकृत
गैर सरकारी	100	13.17	2.93		

व्याख्या :–उपरोक्त तालिका के आधार पर अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं, कि उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 12.93, मानक विचलन 2.91 पाया गया तथा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 13.17, मानक विचलन 2.93 पाया गया है। इन प्राप्तांकों से टी परीक्षण का मान 0.58 पाया गया जो कि स्वतंत्रता के अंश 198 के 0.05 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य 1.97 तथा 0.01 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य 2.60 से कम है। अतः सार्थक नही अन्तर पाया जाता है। शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

(ब) उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन संबंधी त्रुटियों में अंतर नहीं पाया जाता हैं।

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
सरकारी	100	12.81	2.82	0.075	स्वीकृत
गैर सरकारी	100	12.78	2.85		

व्याख्या :–उपरोक्त तालिका के आधार पर अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं, कि उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 12.81, मानक विचलन 2.82 पाया गया तथा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 12.78, मानक विचलन 2.85 पाया गया है। इन प्राप्तांकों से टी परीक्षण का मान 0.075 पाया गया जो कि स्वतंत्रता के अंश 198 के 0.05 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य 1.97 तथा 0.01 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य 2.60 से कम है। अतः सार्थक नही अन्तर पाया जाता है। शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

शैक्षिक निहितार्थ

- हिन्दी में उच्चारण सम्बन्धी दोषों के सुधार के उपायों में मौखिक उच्चारण का अभ्यास देने के साथ–साथ शब्द के लिखे रूप को दिखाकर बालक से शुद्ध उच्चारण करवा कर दोष दूर किये जा सकते हैं।
- बालक कुछ अशुद्धियाँ शिक्षक के अशुद्ध उच्चारण के कारण भी करता है। इस प्रकार की अशुद्धियों के निराकरण हेतु अध्यापक को सबसे पहले स्वयं उच्चारण पर ध्यान देकर उच्चारण संबंधी दोष दूर कर सकता है।
- संयुक्त वर्णों वाले कुछ शब्द को छात्र इसलिए अशुद्ध लिखते है, क्योंकि वे वर्णों को संयुक्त करना नहीं जानते है। इसलिए अध्यापक को चाहिए कि अशुद्धियों के निराकरण के लिए छात्रों को नागरी लिपि का पूर्ण ज्ञान देना चाहिए और वर्णो के संयुक्त करने के नियमों से उन्हें परिचित कराना चाहिए।
- अध्यापकों को प्रत्यय, संधि, उपसर्ग , समास, वर्तनी, उच्चारण, वर्ण –विचार और वाक्य सम्बन्धि त्रुटियों को मध्य नजर रखते हुए विद्यार्थियों को अध्ययन करवाना चाहिए।
- लिखते समय यदि छात्र की किसी शब्द की वर्तनी के सम्बन्ध में थोड़ा सा भी शंका हो, तो तुरन्त शब्द–कोश का प्रयोग कर शब्द की शुद्ध वर्तनी देख लेनी चाहिए। अध्यापक द्वारा बताई गई अशुद्धियों का शोधन भी इस विधि से किया जा सकता है।
- स्वयं बालक को भी 'स्व–वर्तनी संचिका' रखने की आदत डालनी चाहिए जिससे अपनी अशुद्धियों को शुद्ध करने की प्रेरणा मिलेगी।
- वर्ण विचार सम्बन्धी दोषों को दूर करने के लिए विद्यार्थी को लेखन अभ्यास से व अध्यापक की सहायता से वर्ण भेद का ज्ञान करके वर्णों को जोड़ने का निरन्तर अभ्यास करना चाहिए।
- स्वयं बालक को वाक्य निर्माण में कर्त्ता कर्म और क्रिया का यथा स्थान प्रयोग करते हुए कारक चिह्नों का प्रयोग करने का अभ्यास करना चाहिए। क्योंकि कारण चिह्नों का उचित ज्ञान न होने से अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है।
- हिन्दी में समास का प्रयोग करते समय पहले समस्त पद का विग्रह करने का अभ्यास करना चाहिए, क्योंकि विग्रह से अर्थ का ज्ञान होता है और अर्थ के आधार पर ही समास का नामकरण किया जाता है।

संदर्भ सूची

1. भार्गव, महेश. (2006). आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन. कचहरी घाट आगराः पुस्तक प्रकाशन.
2. चौहान, डॉ. समिधा. (2006) हिन्दी मे वर्तनी संबंधी त्रुटियां व क्रियात्मक अनुसंधान, शिविरा पत्रिका दिसम्बर
3. चौहान, रीता (2016–17) हिन्दी शिक्षण, आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा
4. दास, बाबू श्यामसुन्दर. (1960). भाषा विज्ञान, उत्तर प्रदेशः बनारस प्रकाशन
5. गुरू, कामता प्रसाद (1920). हिन्दी व्याकरण, काशी नागरी प्रचारणी सभा
6. कौशिक, जयनारायण. (1986) शुद्ध हिन्दी लेखन, नई दिल्लीः आर्य बुक डिपों, करोल बाग,

7. कपिल, एच. के.(1995). अनुसंधान विधियाँ. मेरठः भार्गव भवन
8. लाल, पुरूषोतम. (1992). हिन्दी शिक्षण, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
9. लाल, रमन बिहारी. हिंदी शिक्षण, मेरठः रस्तोगी पब्लिकेशन्स
10. मितल, प्रो. एम. एल. (2009) हिन्दी शिक्षण, मेरठः इण्टरनेशनल पहिलशिंग हाऊस,
11. पाठक, डॉ. आर.पी. (2013). हिन्दी शिक्षण, नई दिल्लीः कनिष्ठ पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स
12. पाठक, आर.पी. व भारद्वाज, अमिता पाण्डेय. (2012). शिक्षा में अनुसंधान एवं सांख्यिकी, नई दिल्ली : कनिष्क पब्लिशर्स.

*** Corresponding Author**
नीतू चौधरी, *शोधार्थी*
डॉ. नीतू सिंघल, *सहायक आचार्या*
महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)
Email-aaravchoudhary215@gmail.com Mobile-9829164788